Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वैश्वीकरण का सतनामी समाज की अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर प्रभाव (कसडोल विकासखंड के ग्राम –पिसीद के सतनामी समाज के विशेष संदर्भ में)

ओजस्विनी सोनवानी* प्रो. हेमलता बोरकर वासनिक**

* समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत
** समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – वैश्वीकरण का अर्थ होता है, विश्व के विभिन्न देशों का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित करना। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से देश में आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति होती है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख संतों में बाबा गुरु घासीदास जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना की है इन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयां जैसे छुआछूत, जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने अपने उपदेशों में सत्य, अहिंसा और सामाजिक समानता का संदेश दिया। इस पंथ का अनुसरण करने वाले लोग सतनामी कहलाए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वैश्वीकरण के कारण पर्यावरण एवं सतनामी समाज के लोगों के आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। शोध में गैरसहभागी मध्यकालिक अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है, यह अध्ययन अवलोकनात्मक तथा वर्णनात्मक प्रकार का अध्ययन है।

मनुष्य जिस वातावरण में रहता है ,उसे पर्यावरण कहते हैं ।मनुष्य चारों ओर का परिवार हम उसके शारीरिक सामाजिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है वैश्वीकरण से भले ही आर्थिक रूप से उन्नति हुई है, लेकिन इससे सतनामी समाज के सामाजिक पर्यावरण पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण से पर्यावरणीय असंतुलन पर्यावरण प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में अत्यधिक वृद्धि हुई है सतनामी समाज जो प्रकृति के साथ जीवन जीने में अपना विश्वास रखते हैं वह वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव से बहुत ही प्रभावित हुए हैं।

शब्द कुंजी – वैश्वीकरण, सतनामी समाज, पर्यावरण, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना – वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विश्व के विभिन्न देश आपस में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से मिलकर एवं वैश्विक ग्राम का निर्माण करते हैं। वर्तमान परिदृश्य में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जो इसके प्रभाव में ना आया हो। वैश्वीकरण की प्रक्रिया परिवहन ,संचार माध्यमों, व्यापार और निवेश पर आधारित होती है। वैश्वीकरण से संचार तथा परिवहन के साधनों में बढ़ोतरी होती है। राष्ट्रों के मध्य आपस में व्यापार के साथ–साथ निवेश भी बढ़ता है, इससे उनका आर्थिक विकास भी होता है। देश के मध्य सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भी वैश्वीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विभिन्न देशों के मध्य राजनैतिक संबंध भी स्थापित होते हैं।

पर्यावरण पर वैश्वीकरण का प्रभाव– मनुष्य जिस वातावरण से चारों तरफ से घिरा होता है वह पर्यावरण कहलाता है। जिसमें प्राकृतिक एवं मानव निर्मित दोनों ही प्रकार के तत्व सम्मिलित होते हैं, इसके अंतर्गत वायु, जल, मृदा, वनस्पति, जीव–जंतु और हमारा मानव समाज भी सम्मिलित है।

पर्यावरण के विभिन्न घटक :

- **वायु –** वायु हमारे सांस लेने के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण घटक है, जिसमें हम O2 को वातावरण से ग्रहण करते हैं तथा CO2 को श्वसन की प्रक्रिया में उत्सर्जित करते हैं। वैश्वीकरण के परिणामस्वरुप अत्यधिक कल कारखानों का निर्माण हो रहा है, जिससे वातावरण में CO2 की मात्रा बढ़ते जा रही है। कोरोना जैसी महामारी के फैलने का भी प्रमुख कारण वैश्वीकरण ही था, जो एक वायु जनित रोग था, जिसने पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया। जिसने संपूर्ण मानव प्रजाति को शुद्ध ऑक्सीजन की अहमियत समझाई।
- **जल–** जल एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व है, जो जीवन के लिए अत्यंत ही आवश्यक हैं। मनुष्य, जीव– जंतु एवं पेड़–पौधे सभी के लिए जल की आवश्यकता होती है। वैश्वीकरण के कारण अत्यधिक उद्योग का निर्माण हुआ है, जिससे निकलने वाली प्रदूषित जल को नदी–नाले में बहा दिया जाता है, जिससे जल की अम्लीयता बढ़ जाती है। यह नदियों में पाए जाने वाली जीवो तथा पौधों के लिए हानिकारक होता है। वैश्वीकरण से शहरीकरण भी बढ़ा है, जिसके कारण कॉलोनी के निकलने वाली सीवेज के जल को बिना उपचार किये नदी–नालों में बहा दिया जाता है। जिसके कारण नदी का जल प्रदूषित हो जाता है तथा उपयोग करने योग्य नहीं रह जाता है।
- **मृदा –** मृदा एक ऐसी घटक है, जो पेड़–पौधों, जीव–जंतु तथा मनुष्य सभी के लिए अनिवार्य है। वैश्वीकरण के कारण प्लास्टिक और अन्य अनुपयोगी ठोस कचरे को खुले में फेंक दिया जाता है। कारखाने से निकलने वाले कार्बनिक पदार्थ को भी मृदा में बहा दिया जाता है, जिससे उनकी

उर्वरक शक्ति में दुष्प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण के कारण किसान भी अब अपने खेतों में अधिक आय की चाह में अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं, जो सीधे तौर पर मृदा की उपजाऊ क्षमता को प्रभावित करता है।

- **वनस्पति तथा जीव-जंतु –** वनस्पति एवं जीव-जंतु तथा मनुष्य आपस में एक दूसरे के ऊपर आश्रित होते हैं तथा मिलकर पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। पेड़-पौधों से हमें लेने के लिए स्वच्छ वायु तथा भोजन मिलता है, तथा यह श्वसन प्रक्रिया में उत्सर्जित होने वाले कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण भी करते हैं। जीव जंतुओं से भी हमें भोजन एवं अन्य संसाधन प्राप्त होते हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में उद्योगों के निर्माण तथा सड़कों के निर्माण के लिए भूमि की आवश्यकता होती है जिसके लिए मनुष्यों के द्वारा समतलीकरण के नाम पर असंख्य पेड़-पौधों को काट दिया जाता है, जिससे जंगली जीव-जंतुओं का प्राकृतिक आश्रय उनसे छिन जाता है तथा वातावरण में हानिकारक तत्व जैसे-कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, कार्बन मोनोऑक्साइड इत्यादि की मात्रा बढ़ जाती है।
- **मानव सभ्यता पर प्रभाव –** मानव प्रजाति पूरी तरह से पर्यावरण पर निर्भर है। पर्यावरण में किसी भी प्रकार का बदलाव होता है, तो मनुष्य सीधे तौर पर उससे प्रभावित होता है। उसे श्वसन के लिए वायु, पीने के लिए जल एवं भोजन के लिए प्रकृति पर ही निर्भर रहना पड़ता है। वैश्वीकरण से मनुष्य की आर्थिक उन्नति तो होती है, किंतु वह सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप से अपने पारंपरिक वातावरण से दूर होते जा रहा है। नौकरी तथा अधिक आय की तलाश में गांव से शहरों की ओर प्रस्थान करता है, जिसके कारण शहरों की जनसंख्या का घनत्व बढ़ने से शहरी वातावरण में काफी दबाव बढ़ जाता है।

सतनाम पंथ – छत्तीसगढ़ में सतनाम पंथ की स्थापना 19वीं सदी में बाबा गुरु घासीदास के द्वारा की गई। भारत देश में सतनाम पंथ की स्थापना का श्रेय 16वीं से 17वीं सदी के मध्य बाबा गोरखजोगी जी ने हरियाणा के नारनौल में की थी। सतनामी पंथ की नारनौल शाखा के अतिरिक्त पांच अन्य शाखाएं और थी, जिनकी स्थापना नारनौल शाखा की दर्शनिकता तथा सिद्धांतों से प्रेरित होकर हुई थी। यह शाखाएं थीं- रोहतक शाखा, मध्यप्रदेश शाखा, छत्तीसगढ़ शाखा, बारंबाकी शाखा तथा कूका शाखा। सतनामी समाज भी छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जाति में सम्मिलित है। अनुसूचित जाति शब्द का सबसे पहला प्रयोग 1935 में साइमन कमीशन द्वारा किया गया था। गुरु घासीदास जी ने समाज में व्याप्त जातिवाद, पशुबलि तथा अंधविश्वास जैसी बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने सतनाम पंथ की स्थापना की, जो मुख्यत: सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को साथ लेकर चलता है।गुरु घासीदास जी ने पशुबलि की निंदा की और जीवन में शिक्षा के महत्व को समझाया। उन्होंने संपूर्ण मानव समुदाय को 'मनखे ह्मनखे एक समान' का संदेश दिया। जिसका अर्थ यह है कि विश्व का प्रत्येक व्यक्ति समान है एवं जाति या धर्म के आधार पर उनसे भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।

शोध समीक्षा

- त्रिपाठी, मदालसा मणि (2020) के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि वैश्वीकरण आंचलिकता, क्षेत्रीयता और स्थानीयता का धुर विरोधी है। वैश्वीकरण विभिन्न सामाजों में विविधता में वृद्धि करता है तथा बहुसंस्कृतिवाद को बढ़ावा देता है। दूसरी तरह से देखा जाय तो वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण ही देश-विदेश में आयुर्वेद में योग व भारतीय दर्शन बहुत प्रचलित हो रहा है। प्रख्यात वैज्ञानिक प्रोफेसर यशपाल भी भूमंडलीकरण की अपसंस्कृति से चिंतित नजर आते हैं, उनका मानना है कि, 'भूमंडलीकरण का अर्थ यह नहीं है, कि यह सब लोगों के लिए बराबर है। इसमें 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी बात बिल्कुल नहीं है। भूमंडलीकरण एक ऐसी स्वेच्छाकारी प्रक्रिया है, जिसके नियमों का पालन हमें करना पड़ेगा और हम सबको उसके पीछे चलना पड़ेगा। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया यह भी तय करेगी कि हमारी स्थितियां कैसी होगी और उन्हें कैसी होनी चाहिए?'
- जाट, रामफूल (2017) ,आज का युग डिजिटल मीडिया के माध्यम से और ज्यादा आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। वर्तमान डिजिटल युग के प्रारंभ होने से लोग यह मानने लगे थे, कि व्हाट्सएप, फेसबुक, इंटरनेट, ईमेल तथा ब्लॉग्ज के कारण एक नई जागरूक और बौद्धिक रूप से परिष्कृत पीढ़ी तैयार होगी परंतु यह केवल एक स्वप्न ही रह गया है। युवाओं में अकेलापन और अवसाद की समस्या बढ़ रही है, वे चिड़चिड़ा होते जा रहे हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से बहुत सारे परिवार तथा विवाह भी प्रभावित हो रहे हैं । वैश्वीकरण के कारण परिवार में दूरियां बढ़ रही है, एक ही परिवार के विभिन्न सदस्य अधिक आय की तलाश में अलग-अलग स्थान, राज्यों तथा देश में प्रतिस्थापित हो रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से संयुक्त परिवार ने आज एकल परिवार का रूप धारण कर लिया है, पारिवारिक बिखराव के कारण लोकगीत तथा लोक परंपराए भी समाप्ति की ओर अग्रसर हो रही है।
- स्टोरबिएसकी, टिम (2021) वैश्वीकरण के प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही तरह के होते हैं, वैश्वीकरण से अंतरराष्ट्रीय व्यापार और सहयोग में वृद्धि होती है तथा आक्रामकता में भी कमी आती है। सामाजिक वैश्वीकरण के कारण देश के बीच विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान ने चिकित्सा प्रतियोगिता की और पर्यावरण संरक्षण संस्थानों में नवाचार को बढ़ावा दिया है। वैश्वीकरण के कारण कई विकासशील देशों जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, इससे कुशल परिवहन प्रणाली, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता प्रमुख है।

ओजोन परत के क्षरण की समस्या, बढ़ती हुई पर्यावरण जागरूकता के कारण विश्व स्तर पर लोगों की पर्यावरण की प्रति सोचने के लिए बाध्य कर दिया है, जिसके परिणामस्वरुप पर्यावरण संरक्षण के लिए नए कानून नियमों तथा प्रक्रियाओं की निर्माण हुआ है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरुप अब किसी एक स्थान पर रहने वाले व्यक्ति देश या विदेश कहीं भी अपने व्यावसायिक उत्पादक का विक्रय कर सकता है पहले यह स्थानीय स्तर पर ही होता था। वस्तुओं के बढ़ते हुए परिवहन के कारण पर्यावरण पर कई हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं, कोई भी उत्पाद जितनी अधिक दूरी तक तय करता है, ईंधन की खपत भी उतनी ही बढ़ती है, जिसके कारण कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन भी बढ़ता है, जिससे पूरे विश्व में वायु प्रदूषण बढ़ता है। जलवायु में भी परिवर्तन होता है ,वाहनों की तेज आवाजों से ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता है। अगर उत्पादों का जल परिवहन होता है, तो समुद्र में भी जहाजों के अधिक चलने से तेल रिसाव की समस्या बढ़ जाती है, जिससे समुद्री पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है। वैश्वीकरण ने कुछ देशों को तेल, प्राकृतिक गैस और लकड़ी जैसी विभिन्न उर्जा वस्तुओं के उत्पादन में विशेषता प्राप्त करने की अनुमति प्रदान की है, इन ऊर्जा स्रोतों का मुख्य उपउत्पाद ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के रूप में सामने आता है, जो वैश्विक तापमान में वृद्धि करता है।

जैव विविधता में कमी, वनों की कटाई, महासागरों के अमलीकरण, और CO2 गैस की उत्सर्जन मं वृद्धि के कारण जैव विविधता में कमी आती है।

- सेनगुप्ता, वृंदा , पांडे वंदना (2015) के अनुसार वैश्वीकरण कोई आकस्मिक घटना या परिस्थिति नहीं है, बल्कि यह एक अनवरत प्रक्रिया है, जो लंबे समय से चली आ रही है। इसे पूंजीवाद का सबसे आंतरिक स्तर कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, जिसके अंतर्गत आतंरिक और बाहरी दोनों ही तरह से विस्तार की क्रिया मौजूद रहती है ।

शोध का उद्देश्य:

1. वैश्वीकरण का सतनामी समाज की सामाजिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
2. वैश्वीकरण का सतनामी समाज की आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करना।
3. वैश्वीकरण का सतनामी समाज की सांस्कृतिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोधपत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदाबाजार जिले के कसडोल विकासखंड के ग्राम– पिसीद में निवासरत सतनामी समाज के कुल 37 परिवार पर आधारित है। अध्ययन में गैरसहभागी मध्यकालिक अवलोकन प्रविधि का प्रयोग किया गया है ।यह अध्ययन अवलोकनात्मक तथा वर्णात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है।

अध्ययन से प्राप्त परिणाम

(अ) सतनामी समाज की सामाजिक स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव –अपने शोध कार्य के लिए, मैंने बलौदा बाजार जिले के कसडोल विकासखंड के ग्राम– पिसीद को लिया है। यह ग्राम, कसडोल से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां सतनामी जाति के लगभग 37 परिवार निवास करते हैं। वर्तमान में ग्राम पिसीद का सरपंच भी सतनामी समुदाय का सदस्य है। पीने के पानी के लिए इस ग्राम में एक पानी की टंकी बनाया गया है, यहीं से पूरे गांव में जल की आपूर्ति नल के द्वारा प्रत्येक दिवस, सुबह के समय की जाती है। केवल तीन ही सतनामी परिवार के घर में स्वयं का कुआं है। सभी घर में शौचालय तथा स्नानागार की व्यवस्था है। यहां एक ही सतनामी परिवार के घर में ट्रैक्टर व कृषि के लिए आवश्यक उपकरण की उपलब्धता पाई गई है। सतनामी समुदाय के लोग अपने खेत में कृषि का कार्य करने के साथ ही साथ दूसरे परिवार और समाज के लोगों के खेतों में भी अधिक आय के लिए कृषि का कार्य करने जाते हैं। यह लोग कृषि में आधुनिक यंत्रों और तथा कीटनाशक का प्रयोग करते हैं। आवागमन के लिए सभी घरों में दो पहिया वाहन उपलब्ध हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण इस समाज की खेती करने वाले व्यक्ति परंपरागत गोबर की खाद की जगह कृत्रिम रासायनिक उर्वरकों को उपयोग में लाने लगे हैं तथा विभिन्न कीटनाशकों के प्रयोग के कारण कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है।

गांव में जिस स्थान पर इस समाज के लोग निवास करते हैं, वहां की सड़क की डामरीकृत है, जिससे वर्षा के जल का ठीक से अवशोषण नहीं होने के कारण जल निम्नस्तर पर चला गया है। कृषि कार्य में समाप्त हो जाने के पश्चात, कई परिवार के लोग पैसे की कमी के कारण अन्य क्षेत्र में अल्पकालिक प्रवास पर चले जाते हैं, यह वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण ही होता है। अधिक धनार्जन की चाह में वे अपने निवास स्थान से दूर के क्षेत्र में प्रस्थान कर जाते हैं। भोजन बनाने के लिए सतनामी समाज के लोग गैस के साथ–साथ, आज भी चूल्हे में खाना बनाते हैं, जिसके लिए भी पास ही स्थित जंगल से लकड़ी लाते हैं या गांव में जो लकड़ी बेचने वाले आते हैं, उनसे लकड़ियां खरीदते हैं।

(ब) सतनामी समाज की आर्थिक स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव– यहां निवासरत सतनामी समाज के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि हैं, कुछ परिवार धनार्जन के लिए अपने घर के सामने छोटी किराये की दुकान लगाते हैं, कुछ लोग साप्ताहिक बाजार में सब्जी बेचने का कार्य करते हैं जो उसकी आय का अन्य स्रोत है। सतनामी जाति के लोगों के घर पक्के तथा अर्धपक्के प्रकार के हैं। ग्राम की महिलाओं के द्वारा शासन से प्राप्त सुविधाओं के अनुरूप अपने लिए महिला स्वयं सहायता समूह बनाया है, जिससे वह मशरूम उगाने, वाशिंग पाउडर तथा साबुन बनाने का भी काम करते हैं, जिसे वह अपने आसपास के बाजार में भेजते हैं, जिससे वे स्वयं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना पाती है। खेती के लिए पारंपरिक के स्थान पर आधुनिक उपकरण के प्रयोग से शारीरिक श्रम में कमी आई है, धान कटाई के लिए भी अब थ्रेसर का प्रयोग होने लगा है। वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण दूसरे प्रांत जैसे पंजाब व हरियाणा के लोग यहां अपनी मशीनों से यह कार्य करते हैं।

दूसरे गांव एवं प्रदेश के लोग भी यहां अपने कृषि उपकरणों को लेकर आते हैं, जिससे प्राकृतिक ईंधन जैसे डीजल व पेट्रोल की खपत बढ़ती है, जिससे CO2 के अधिक उत्सर्जन के कारण वायु प्रदूषण होता है, निसंदेह इससे कई परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है, लेकिन यह पर्यावरण के लिए काफी नुकसानदायक भी है।

सतनामी समाज की शैक्षणिक स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव– वैश्वीकरण के कारण शिक्षा का व्यापक प्रसार होने से यहां निवासरत सतनामी परिवार के अधिकतम लोगों ने उच्चतर माध्यमिक, स्नातक और स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की है। सतनामी परिवार के कुछ लोग सरकारी नौकरी में कार्यरत हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से प्रत्येक घर में मोबाइल इंटरनेट के साथ उपलब्ध है। पिसीद ग्राम के युवा तथा विद्यालय जाने वाले छात्र, मोबाइल में अपना अधिकतर समय व्यतीत करते है, मोबाइल में ज्यादा समय देने के कारण वे शारीरिक खेलकूद और व्यायाम को महत्व नहीं देते, जिसके कारण उनका शारीरिक तथा मानसिक विकास अवरुद्ध होता है। वे केवल एक ही जगह बैठकर अपने समय को व्यतीत कर देते हैं।

(स) सतनामी समाज की सांस्कृतिक स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव– वैश्वीकरण का सतनामी समाज की संस्कृति पर उनके रहन–सहन खान पान तथा वेशभूषा पर बहुत ही व्यापक प्रभाव पड़ा है, इस समाज के लोग पारंपरिक परिधानों को त्याग कर पश्चिमी सभ्यता पर आधारित प्रश्नों का प्रयोग करने लगे हैं ग्राम के सतनामी समाज के लोगों पर संस्कृतिवाद का प्रभाव भी देखने को मिला है। यह लोग अपने धार्मिक गुरु के अलावा अन्य देवी देवताओं को भी मानने लगे हैं। यह ग्राम में आयोजित होने वाले गणेशोत्सव दुर्गा उत्सव, दशहरा एवं जन्माष्टमी इत्यादि उत्सव में भी भाग लेते हैं। वैश्वीकरण ने समाज के लोगों को अन्य समाज की संस्कृतियों से जोड़ने का अवसर प्रदान किया है, वैश्वीकरण के परिणाम स्वरुप समाज के लोगों का परिवार तथा समाज के प्रति नजरिया में भी बदलाव आया है, संयुक्त परिवार के वजह अभी एकाकी परिवार में रहने लगे हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से उनमें भाषागत बदलाव भी देखने को मिल रहा है, पारंपरिक छत्तीसगढ़ी भाषा के अलावा अब ये हिंदी वह अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग

करने लगे हैं।

वैश्वीकरण के परिणाम स्वरुप इनके खान–पान में भी पश्चिमी शैली के ईवरंद का उपयोग बढ़ गया है इनके साप्ताहिक बाजारों में अब मोमोस, चाउमिन की भी बिक्री होने लगी है। यह अपने पारंपरिक लोक नृत्य के साथ ही साथ अन्य पश्चिमी नृत्य अपना रहे हैं। अंतत: यही कहा जा सकता है कि पश्चिमीकरण और संस्कृतिकरण के कारण सतनामी समाज के लोगों के जीवन में मूल पारंपरिक व्यवसाय तीज–त्यौहार, खान–पान, रीति–रिवाज, रहन–सहन, नृत्य आदि में बदलाव होता प्रतीत हो रहा है।

निष्कर्ष – वैश्वीकरण के प्रभाव से दुनिया का कोई भी देश अछूता नहीं रह गया है। वैश्वीकरण से समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है। वैश्वीकरण का व्यापक प्रभाव कसडोल ब्लॉक के ग्राम पिसीद में निवास करने वाले सतनामी समाज के लोगों में भी देखने को मिला। इस समाज के लोग स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृषि में उन्नत तकनीकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं। गाँव के हर घर में मोबाइल तथा इंटरनेट की उपलब्धता है। सतनामी समाज के लोग अन्य समाज के साथ मिला–जुला व्यवहार रखते हैं। वे सब्जी बेचने, दुकान चलाने, तथा कृषि कार्य भी करते हैं। महिलाएं भी अपने आप को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं–सहायता समूह के माध्यम से विभिन्न उत्पाद बनाती हैं तथा उसे आसपास के गांवों में बेचती हैं।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरुप अधिक आय की चाहत में कुछ सतनामी परिवार अपने निवास स्थान से दूर पलायन भी करते हैं। वैश्वीकरण से उनका आर्थिक विकास तो हो रहा है, लेकिन पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य में यह नुकसानदायक भी साबित हो रहा है। सड़कें डामरीकृत तथा पेड़ कम होने के कारण इस ग्राम में जल स्तर काफी निम्न स्तर पर पहुंच गया है। कृषि में कीटनाशकों का प्रयोग करने के कारण उन में त्वचा तथा श्वास संबंधी विभिन्न बीमारियां भी देखने को मिल रही हैं। मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से बच्चे तथा युवा जो समय स्वयं के शारीरिक या मानसिक विकास में लगा सकते हैं वह बेवजह ही खराब हो रहा है। वह सामाजिक होने के स्थान पर आत्मकेंद्रित तथा चिडचिडे हो रहे हैं। पैसे बचाने की लालसा में चूल्हे में खाना बनाने से उत्पन्न होने वाले धुएं से आंखों में जलन तथा सांस लेने में तकलीफ होती है, साथ ही साथ यह लकड़ियां पेड़ों से काटकर लाई जाती है जिससे वहां जंगल की सघनता कम हो रही है।

सतनामी समाज की अपनी अलग संस्कृति गीत तथा नृत्य होते हैं, प्रवास के कारण वह अपने लोगों से ज्यादा मेल–मिलाप नहीं कर पाते जिसकी वजह से उनके सामने सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण भी खतरे में है।

पर्यावरण विविधता का संरक्षण करता है। यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है पर्यावरण बहुत सी प्राकृतिक घटनाओं जैसे – बाढ़ ,सूखा तथा तूफान को नियंत्रित करने में सहायक होता है ,इसलिए हमें अपने वातावरण को प्रदूषण रहित रखना चाहिए। सम्पूर्ण विश्व में अधिक प्रदूषण हो जाने के कारण ओजोन परत में छिद्र हो गया है, जो कि समूचे विश्व के लिए अत्यंत ही सोचनीय विषय बन गया है।ओजोन परत की अत्यधिक महत्व होती है, क्योंकि यह सूर्य से पृथ्वी तक पहुंचने वाले हानिकारक पराबैंगनी किरणों से हमें सुरक्षा प्रदान करती है।

सुझाव :

1. सतनामी समाज के लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना।
2. जल प्रबंधन एवं संरक्षण के लिए प्रेरित करना ।
3. सौर ऊर्जा के उपयोग के लिए प्रेरित करना ।
4. कचरा प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करना ताकि जल एवं स्थल प्रदूषण को कम किया जा सके ।
5. वैश्वीकरण के साथ वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए संयुक्त प्रयास करने के लिए प्रेरित करना।
6. पर्यावरणीय शिक्षा का सामाजिक रूप से प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए कचरे के पुनर्चक्रण को अपनाना चाहिए
7. ऊर्जा की बचत करने के लिए समाज को प्रेरित करना चाहिए

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. सेनगुप्ता वृंदा, पांडेय वंदना (2015) वैश्वीकरण के परिदृश्य में लुप्त होता साहित्य और संस्कृति , पृ. क्र. – 62–65 (International Journal of Reviews and Research in Social Sciences)
2. जाट रामफूल (2017) परिवार विवाह संस्था पर वैश्विकरण का प्रभाव एवं युवा दृष्टिकोण पृ. क्र . 625 International jounal of applied research
3. बैरवा रामप्रसाद (2024) भारतीय समाज में शहरीकरण के प्रभाव एवं चुनौतियां एक समाजशास्त्रीय अवलोकन International jounal of leading research publication, पृ. क्र.– 4
4. स्टोरबिएस्की, टिम (2021) पर्यावरण पर वैश्वीकरण के प्रभाव
5. पाण्डेय , प्रवेश कुमार (2021), डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार , यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन पृ. क्र.–114
6. कुमार , सुरेश (2010) मध्यकाल में सतनामी समाज और संस्कृति , नारनौल शाखा का एक अध्ययन , पृ. क्र.– 230 , 233
7. त्रिपाठी , मदालसा मणि (2020) भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव पृ. क्र.– 81,82 .

****